IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण महिलाएं : जनसंचार माध्यमों से जन–जागरूकता की पृष्ठभूमि का समाजषास्त्रीय अध्ययन (काषीपुर क्षेत्र के विषेष संदर्भ में)

सुरेन्द्र

मौ0 उस्मान

1. **षोध छात्र, समाजषास्त्र राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काषीपुर, उधम सिहं नगर, उत्तराखण्ड।**
2. **षोध छात्र, समाजषास्त्र राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काषीपुर, उधम सिहं नगर, उत्तराखण्ड।**

सांराष – *भारत एक विकासशील देश हैं, जहां परंपराओं व रीति–रिवाजों की जड़े काफी गहरी हैं। आज सर्वविदित हैं कि महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देश के विकास की गति तेज करने की क्षमता में जनसंचार के माध्यम से जागरूकता का महत्व आये दिन महिलाओं के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा हैं। जो महिलाओं की आधारभूत जीवन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। यह आवश्यक हैं कि उन्हें जनसंचार सुविधा, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, प्रशिक्षण, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा के साथ–साथ राजीनतिक गतिविधियां व सहभागिता, नीति निर्माण व निर्णय प्रक्रिया में भी भाग लेने के अवसर में ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता का प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। पत्रकारिता, प्रेस, मीडिया और चैनल ये कुछ ऐसे माध्यम हैं जो महिलाओं को बहुत ज्यादा प्रभावी व प्रचलित हैं। आम लोग मीडिया में खबर आने, अखबार में फोटों छपने और चर्चा में आने महिलाएं उत्सुक रहती हैं। साथ ही मीडिया में कुछ भी आ जाय, महिलाएं उस पर सहज विश्वास कर लेती हैं। यानी प्रचार और समाचार माध्यमों में आने वाली सामग्रियों का महिलाओं पर काफी जागरूकता को देखा जा सकता हैं। इसीलिए मीडिया को भी कुछ मामलों में महिलाओं को अपने व्यवहार परिवर्तन में मदद मिलती हैं। सनसनीखेज खबरें देने के अलावा विकास और सामाजिक बदलाव, जो पत्रकारिता के प्रमुख उदेश्यों में महिलाओं में जागरूकता भी शामिल हैं। सूचना प्रौद्योगिकी विशेष रूप में मोबाइल संचार के उत्कर्ष के इस दौर में देश में मीडिया की महिलाओं तक पहुंच काफी बढ़ गई हैं और वे न सिर्फ समाचार देख सुन रहे हैं, बल्कि उस पर अपनी त्वरित प्रतिक्रिया भी देते हैं ऐसे में पत्रकारिता एक अकेला ऐसा क्षेत्र हैं जिसके माध्यम से महिलाओं को अपनी आदतों में बदलाव के बारे में जागरूक किया जा सकता हैं। मीडिया के माध्यम के समाचार पत्र हो रेडियों या टीवी, स्वच्छता, बीमा योजना और बचत खाते खुलवाने जैसे मुद्दों पर अब सकारात्मक रिपोर्टिंग देखने को महिलाओं को मिलती हैं।*

मुख्य षब्द – *जागरूकता, जनसंचार सुविधा, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, प्रशिक्षण, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, राजीनतिक गतिविधियां व सहभागिता, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रचार और समाचार, त्वरित प्रतिक्रिया, रेडियों या टीवी, स्वच्छता, बीमा योजना और बचत खाते खुलवाने*

प्रस्तावना – प्रकृति ने पुरूष व महिला को एक–दूसरे का पूरक बनाया हैं। उनके पारस्परिक सहयोग से मानव जाति निरंतर चलती रहती हैं। दोनों का एक–दूसरे के लिए समान महत्व हैं, चाहे नारी को अबला कहा जाए या कमजोर, किंतु वास्तव में वही पुरूष की शक्ति हैं और जीवन के प्रत्येक पक्ष में पुरूष को सबल प्रदान करती हैं। समय, सत्ता, शासन, प्रशासन सभी बदलते रहे हैं, लेकिन वह आज भी आस्तित्व की खोज में लगी हैं। आज के सूचना–प्रौद्योगिकी, इंटरनेट और अंतरिक्ष के युग में जहां महिला ने सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर रही हैं तो वही अनेक परिवारों तथा समाजों में महिला को जीवन की मूलभूत सुविधाएं भी प्राप्त नही हो पाती हैं।

भारत के संविधान में महिलाओं व पुरूषों को समान अधिकार प्रदान किए गए हैं, किंतु आज भी महिलाओं के साथ भेदभाव व असमानता का व्यवहार किया जाता हैं। उन्हें विकास के समुचित अवसर नही मिलते। उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति पुरूषों की अपेक्षा निम्नस्तरीय रहती हैं। उनके जीवन व अधिकारों पर पुरूषों का नियंत्रण व वर्चस्व कायम रहता हैं। जीवन व समाज की पहली इकाई परिवार से लेकर समस्त शीर्ष स्तरों पर वे अपेक्षा का शिकार होती हैं। उनके ही विकास में उनकी भागीदारी व योगदान को प्रायः महत्वहीन समझा जाता हैं। ऐसे में उसे जागरूक और सशक्त बनाने में जनसंचार माध्यमों की आवश्यकता हैं, ताकि वह अपने अस्तित्व को पहचानकर अपनी क्षमताओं का विकास करें और परिवार, समाज तथा देश के विकास में अपना अनमोल योगदान दे सके। यही महिलाओं का जागरूक सशक्तीकरण कहलायेगा। महिलाओं के विकास में समाज तथा देश का प्रत्येक पक्ष उनकी भागीदारी से संबंध रखता हैं, जो उनके समग्र जीवन स्तर को ऊंचा उठा सकें, उन्हें जीवन में ऐसे अवसर प्रदान कर सकें, जिससे वे जागरूक बनकर जीवन के विभिन्न पक्षों के महत्व को समझ सकें। विश्व के अन्य देशों की तुलना में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति आज भी दयनीय हैं। यहां ग्रामीण महिलाओं के प्रति भेदभाव तथा उपेक्षापूर्ण बरताव किया जाता हैं। वे अक्सर हिंसा व उत्पीड़न की शिकार होती रहती हैं। भारत एक विकासशील देश हैं, जहां पंरपराओं व रीति–रिवाजों की जड़े काफी गहरी हैं। आज सर्वविदित हैं कि महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देश के विकास की गति तेज करने की क्षमता में जनसंचार के माध्यम से जागरूकता का महत्व आये दिन महिलाओं के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा हैं। जो महिलाओं की आधारभूत जीवन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। यह आवश्यक हैं कि उन्हें जनसंचार सुविधा, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, प्रशिक्षण, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा के साथ–साथ राजीनतिक गतिविधियां व सहभागिता, नीति निर्माण व निर्णय प्रक्रिया में भी भाग लेने के अवसर में ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता का प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। पत्रकारिता, प्रेस, मीडिया और चैनल ये कुछ ऐसे माध्यम हैं जो महिलाओं को बहुत ज्यादा प्रभावी व प्रचलित हैं। आम लोग मीडिया में खबर आने, अखबार में फोटों छपने और चर्चा में आने महिलाएं उत्सुक रहती हैं। साथ ही मीडिया में कुछ भी आ जाय, महिलाएं उस पर सहज विश्वास कर लेती हैं।

यानी प्रचार और समाचार माध्यमों में आने वाली सामग्रियों का महिलाओं पर काफी जागरूकता को देखा जा सकता हैं। इसीलिए मीडिया को भी कुछ मामलों में महिलाओं को अपने व्यवहार परिवर्तन में मदद मिलती हैं। सनसनीखेज खबरें देने के अलावा विकास और सामाजिक बदलाव, जो पत्रकारिता के प्रमुख उदेश्यों में महिलाओं में जागरूकता भी शामिल हैं। सूचना प्रौद्योगिकी विशेष रूप में मोबाइल संचार के उत्कर्ष के इस दौर में देश में मीडिया की महिलाओं तक पहुंच काफी बढ़ गई हैं और वे न सिर्फ समाचार देख सुन रहे हैं, बल्कि उस पर अपनी त्वरित प्रतिक्रिया भी देते हैं ऐसे में पत्रकारिता एक अकेला उेसा क्षेत्र हैं जिसके माध्यम से महिलाओं को अपनी आदतों में बदलाव के बारे में जागरूक किया जा सकता हैं। मीडिया के माध्यम के समाचार पत्र हो रेडियों या टीवी, स्वच्छता, बीमा योजना और बचत खाते खुलवाने जैसे मुद्दों पर अब सकारात्मक रिपोर्टिंग देखने को महिलाओं को मिलती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के प्रेरक व्यक्तित्व, ग्रामीण विकास और स्वास्थ्य मुद्दों पर मीडिया कवरेज बढ़ा हैं, इसीलिए अब हम अपेक्षा कर सकते हैं कि मीडिया नकारात्मकता से सकारात्मकता की

ओर, धीरे–धीरे ही सही कदम बढ़ाएगा। अबर हम मीडिया के पत्रकारिता के उद्देश्यों की बात करे तो, पत्रकारिता के पेशे के प्रमुख कार्य होते हैं :

1. जानकारी देना
2. जन–जागरूकता लाना और रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वास पर रोक लगाना
3. शिक्षा का प्रसार
4. जनमत निर्माण
5. मनोरंजन

इंटरनेट मीडिया के माध्यम से व्यक्तिगत सूचना एकत्र कर ठगों ने लोगों को शिकार बनाने को पेशा बना लिया हैं। वे फोन पर रिश्तेदारों का हवाला देकर आपको विश्वास लेंगे और उसके बाद किसी परिचित की बिमारी या अन्य बहाना कर कब शिकार बना लेंगे, इसका पता भी नही चलेगा। क्षेत्र में पिछले एक बर्ष में ऐसे चार मामले सामने आए हैं, जिनमें लोगों को विश्वास में लेकर 12 लाख रूपये से अधिक की ठगी की जा चुकी हैं।

स्रोत सर्वेक्षण – दैनिक जागरण, (8 मई 2023), इंटरनेट मीडिया के माध्यम से व्यक्तिगत सूचना एकत्र कर ठगों ने लोगों को षिकार बनाने को पेषा बना पृ0 संख्या. 02।

कई शोध बताते हैं कि यदि कोई सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता हैं और हमें डिप्रेशन की ओर ले जा सकता हैं। तो वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया साइबर बुलिंग को बढ़ावा देता हैं तथा फेक न्यूज और हेट स्पीच फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

यह फेक न्यूज और हेट स्पीच फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। सोशल मीडिया पर गोपनीयता की कमी होती हैं और कई बार आपका निजी डेटा चोरी होने का खतरा रहता हैं। साइबर अपराधों जैसे हैकिंग और फिशिंग आदि का खतरा भी बढ़ जाता हैं। आजकल सोशल मीडिया के माध्यम से धोखाधड़ी का चलन भी काफी बढ़ गया हैं, ये लोग ऐसे सोशल मीडिया उपयोगकर्ता की तलाश करते है जिन्हें आसानी से फंसाया जा सकता हैं। सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता हैं।

षंभूनाथ,सा,जी उचित लिखते हैं कि ''मीडिया संसार की नई घटनाओं ने आंरभ में जनतंत्र, विकास और जनहित के दिखाए गए सब्जबागों को सुखा दिया हैं, जिसमें महिलाओं की आधुनिकता की अनेकांतता की उत्साह भरी बातें तथा सूचना समाज की मोदक तस्वीर तोड़ दी हैं।''[1] यह चिंताजनक बात हैं कि मीडिया का दायित्व हैं कि जनतंत्र के मुद्दे को उठाए जो समाज के अंदर ही अंदर जर्जर कर रही हैं।

रूपरेखा,वर्मा,ने कहा कि ''मीडिया की हर विधा ने स्त्री को केंद्र में रखकर अपने व्यापार को भी बढ़ाया हैं जिसमें स्त्री समाज की सोच और मानसिकता को बदलकर उसे व्यवसायी प्रवृत्ति का बनाया हैं।''[2] विज्ञापन में प्रदर्शित किसी स्त्री को देखकर यह नही लगता कि उसकी संवेदनशील, लज्जा, भावुकता उसमें शेष भी हैं कि नही, क्योंकि लज्जा और संवेंदनशीलता ही उसका आभूषण हैं, वह भी व्यवसाय में फंसकर मुरझा गई।

अरविंद,जैन,ने नई स्त्री की अवधारणा को विकसित किया हैं, जिसमें कि आजादी के बाद स्त्रियों की साक्षरता दर बढ़ी हैं उनकी आत्मनिर्भरता बढ़ी हैं और नौकरियों, रोजगार, व्यवसाय आदि में अब स्त्रियों ने आना शुरू किया हैं, विशेषकर भूमंडलीकरण के बाद स्त्रियों की काफी स्थिति में परिवर्तन देखने को मिलता हैं।''[3]

रूपरेखा,वर्मा, लिखती हैं कि ''आधुनिक मीडिया का एक बड़ा हिस्सा किस तरह महिलाओं के संबंधों का व्यापारीकरण कर रहा हैं और दूसरी बात यह हैं कि वर्तमान मीडिया किस तरह परंपराओं व रीति–रिवाज को बाजार की जरूरत के हिसाब से नित नए रूपों में बढ़ रहा हैं।''[4] महिलाओं के विकास तथा उनकी दशा सुधारने के लिए समय–समय पर सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जाते रहे हैं, जो महिलाओं के कल्याण में उपलब्धिपूर्ण माने जाते हैं, किन्तु महिला सशक्तिकरण की दिशा में सरकार से ज्यादा सक्रिय योगदान में उन संगठनों का भी हैं, जो सरकारी तंत्र का प्रत्यक्ष अंग होते हैं, बल्कि वे महिला के विकास के मुद्दो को क्रियान्वित करने के लिए सरकार पर समूह दबाव डालते रहते हैं। वे महिलाओं को विभिन्न रूपों में संगठित कर उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाते हैं, ताकि वे अपने विकास को समझ सकें तथा सरकार पर अगले विकास हेतु नीति निर्धारित करने के लिए जोर डालने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं। महिलाओं की कानूनी शिक्षा (लोकतंत्र) के माध्यम को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता हैं।

महिलाओं की कानूनी षिक्षा में (लोकतंत्र) के माध्यमों की भूमिकाएं

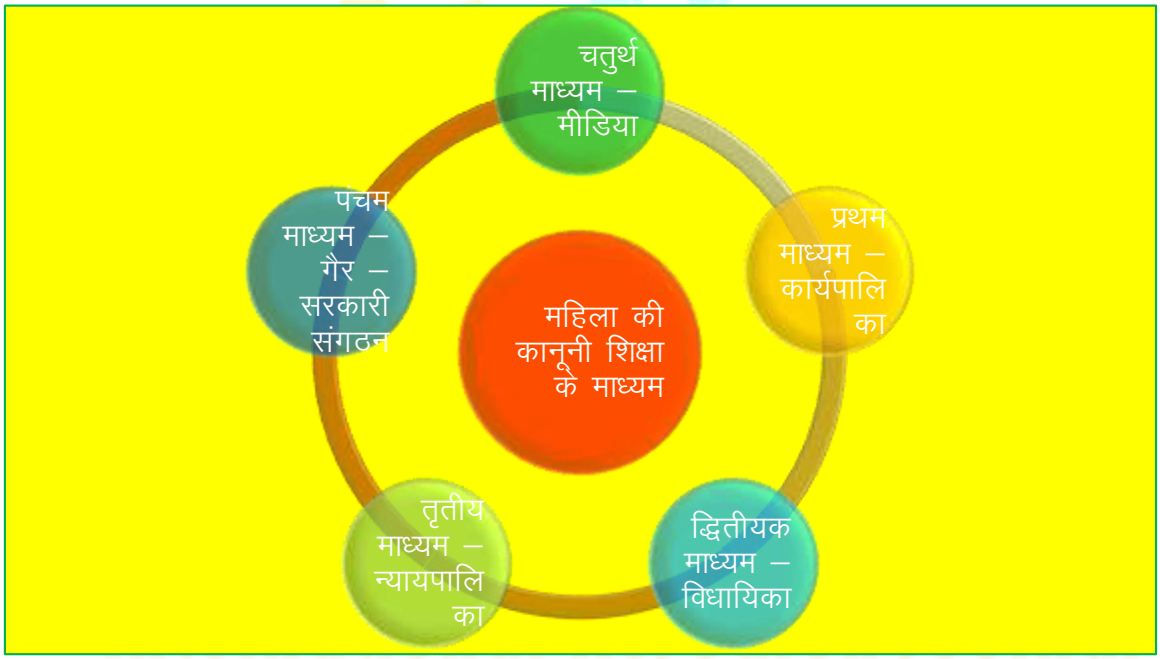

राम,अहूजा ने ''अपने अध्ययन में पाया कि 25 वर्ष की आयु की स्त्रियों के साथ हुई घटना को आज मीडिया के माध्यम से देखा जा सकता हैं, जिसमें परिवारों की घटनायें में पत्नी को पीटना, असमायोजन व दुर्व्यवहार आदि की घटनाओं को देखकर उनके प्रति कानूनी सहायता की प्राप्ति की जा सकती हैं जो आज जनसंचार माध्यमों की पहुचं के कारण कानूनी शिक्षा को बढ़ावा मिला हैं।''[5]

हेना,नकवी,(2017), ने अपनी पुस्तक में ''**व्यवहार परिवर्तन संचार और पत्रकारिता**'' में व्यवहार परिवर्तन संचार को विकास रणनीति के मुद्दों में स्थान दिए जाने की आवश्यकता हैं, क्योंकि महिला/पुरूषों का व्यवहार में समुचित संचार की प्रक्रिया द्वारा पूरा किया जा सकता हैं, जिसमें महिलाओं की सोच, धारणाओं, रीतियों एवं आदतों को बदलने में मदद करता हैं।''[6]

लैंगिक समानता के विकास में मीडिया को जनसंचार के रूप में माना जाता हैं। मीडिया से हमें देश दुनिया से जुड़ी जानकारियां तो मिलती हैं साथ ही सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए समाधान भी प्रदान करता हैं। टीवी, रेडियों, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, विभिन्न पुस्तकें और इंटरनेट व कम्प्यूटर मीडिया के साधन हैं। इसके साथ ही जनसंचार माध्यमों के द्वारा जनता को लैंगिक विषमता के कुप्रभावों और लैंगिक समानता के लाभों से अवगत कराया जाता हैं जिससे लोग जागरूक बनते हैं और लैंगिक समानता के विकास के प्रयास करने लगते हैं। मीडिया देखभाल या घरेलू भूमिका निभाने

वाले या हिंसा का विरोध करने वाले पुरूषों को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति रखता हैं। इस तरह के चित्रण इस धारणा को प्रभावित कर सकते हैं कि समाज पुरूषों और महिलाओं से क्या उम्मीद कर सकता हैं, बल्कि वे खुद से क्या उम्मीद कर सकते हैं। वे समाज में महिलाओं और पुरूषों की भूमिकाओं के बारे में असंतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं।

धंडियां,(2008), ने कहा कि ''महिला सशक्तिकरण का संबंध महिलाओं को अपने जीवन पर शक्ति और नियंत्रण प्राप्त करने में मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं।''[7] ये पुरूषों और महिलाओं के लिए समान अवसर को देने में काम करती रहती हैं और जिसके कारण महिलाओं में जागरूकता, आत्मचेतना जागृत करना, विकल्प में वृद्धि तथा उन ढ़ांचा और संस्थानों को परिवर्तित करने के लिए संसाधनों और कार्यवाही तक पहुंचने में प्रयास करती रहती हैं जो लैगिंक भेदभाव और असमानता को कम करने का संदेश भी देती हैं। जनसंचार माध्यमों के द्वारा वर्तमान समय में ग्रामीण लड़कियों व महिलाएं संचार माध्यमों से विभिन्न प्रकार से सदुपयोग कर रही हैं। जो निम्न इस प्रकार से देखा जा सकता हैं –

1. यह शिक्षित करता हैं महिलाओं को रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देखने व सुनने को मिलती हैं।
2. ताजा खबर बहुत कम समय में उपलब्ध होती हैं दूरी कोई बाधा नही हैं। मीडिया हर दिन महिलाओं को समाचार प्रदान करता हैं और उन्हें दुनिया की नवीनतम घटनाओं से अवगत कराता हैं।
3. आप अपनी छुपी हुई प्रतिभा को बाहर आने दे सकते हैं। वे अभिनय, गायन और कॉमेडी जैसे मीडिया के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं।
4. बच्चों का ज्ञान बढ़ता हैं। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, पशु कार्यक्रम और अन्य कार्यक्रम बच्चों को सीखने में मदद कर सकते हैं।
5. रेडियो सुविधाजनक हैं क्योंकि लोगों को त्वरित समाचार मिलते हैं, और कोई भी इसे स्मार्टफोन से एक्सेस कर सकता हैं।
6. यह जन–उपभोक्ता उत्पादों को बढ़ावा देने का एक शानदार तरीका हैं। इससे उत्पाद की ब्रिकी बढ़ सकती हैं।
7. यह मनोरंजन का एक बड़ा स्रोत हैं। संगीत और टीवी कार्यक्रम आपका मनोरंजन करने का एक शाानदार तरीका हैं।
8. टेलीविजन सूचना के इलेक्ट्रॉनिक दोहराव की अनुमित देता हैं। यह कम उत्पादन लागत पर बड़े पैमाने पर शिक्षा को संभव बनाता हैं।
9. मीडिया विविध संस्कृतियों के प्रसार की सुविधा प्रदान करता हैं। मीडिया विभिन्न सांस्कृतिया प्रथाओं को प्रदर्शित करता हैं।
10. यह दुनिया भर की महिलाओं को एक साथ आने और उनके मतभेदों को स्वीकार करने में काम करता हैं।

निष्कर्ष

भारत जैसे देश में जहां जन–जागरूकता और सशक्त बनाने में जनसंचार माध्यमों की आवश्यकता हैं, ताकि वह अपने अस्तित्व को पहचानकर अपनी क्षमताओं का विकास करें और परिवार, समाज तथा देश के विकास में अपना अनमोल योगदान दे सके। यही महिलाओं का जागरूक सशक्तीकरण कहलायेगा। महिलाओं के विकास में समाज तथा देश का प्रत्येक पक्ष उनकी भागीदारी से संबंध रखता हैं, जो उनके समग्र जीवन स्तर को ऊंचा उठा सकें, उन्हें जीवन में ऐसे अवसर प्रदान कर सकें, जिससे वे जागरूक बनकर जीवन के विभिन्न पक्षों के महत्व को समझ सकें। विश्व के अन्य देशों की तुलना में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति आज भी दयनीय हैं। यहां ग्रामीण महिलाओं के प्रति भेदभाव तथा उपेक्षापूर्ण बरताव किया जाता हैं। वे अक्सर हिंसा व उत्पीड़न की शिकार होती रहती हैं।

भारत एक विकासशीाल देश हैं, जहां पंरपराओं व रीति–रिवाजों की जड़े काफी गहरी हैं। आज सर्वविदित हैं कि महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देश के विकास की गति तेज करने की क्षमता में जनसंचार के माध्यम से जागरूकता का महत्व आये दिन महिलाओं के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा हैं। जो महिलाओं की आधारभूत जीवन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। यह आवश्यक हैं कि उन्हें जनसंचार सुविधा, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, प्रशिक्षण, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा के साथ–साथ राजीनतिक गतिविधियां व सहभागिता, नीति निर्माण व निर्णय प्रक्रिया में भी भाग लेने के अवसर में ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता का प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। पत्रकारिता, प्रेस, मीडिया और चैनल ये कुछ ऐसे माध्यम हैं जो महिलाओं को बहुत ज्यादा प्रभावी व प्रचलित हैं। आम लोग मीडिया में खबर आने, अखबार में फोटों छपने और चर्चा में आने महिलाएं उत्सुक रहती हैं। साथ ही मीडिया में कुछ भी आ जाय, महिलाएं उस पर सहज विश्वास कर लेती हैं, यानी प्रचार और समाचार माध्यमों में आने वाली सामग्रियों का महिलाओं पर काफी जागरूकता को देखा जा सकता हैं। इसीलिए मीडिया को भी कुछ मामलों में महिलाओं को अपने व्यवहार परिवर्तन में मदद मिलती हैं। सनसनीखेज खबरें देने के अलावा विकास और सामाजिक बदलाव, जो पत्रकारिता के प्रमुख उदेश्यों में महिलाओं में जागरूकता भी शामिल हैं। सूचना प्रौद्योगिकी विशेष रूप में मोबाइल संचार के उत्कर्ष के इस दौर में देश में मीडिया की महिलाओं तक पहुंच काफी बढ़ गई हैं और वे न सिर्फ समाचार देख सुन रहे हैं, बल्कि उस पर अपनी त्वरित प्रतिक्रिया भी देते हैं ऐसे में पत्रकारिता एक अकेला ऐसा क्षेत्र हैं जिसके माध्यम से महिलाओं को अपनी आदतों में बदलाव के बारे में जागरूक किया जा सकता हैं। मीडिया के माध्यम के समाचार पत्र हो रेडियों या टीवी, स्वच्छता, बीमा योजना और बचत खाते खुलवाने जैसे मुद्दों पर अब सकारात्मक रिपोर्टिग देखने को महिलाओं को मिलती हैं।

संदर्भ – ग्रंथसूची

1. सा. शंभूनाथ,(2000),आज की मीडिया, कोलकाता, पृ.सं0. 120।
2. वर्मा, रूपरेखा,(2006),वीमेंस फेसेस मीडिया इमेजेस : कोलकाता, पृ. संख्या. 14।
3. जैन, अरविंद,(2003),नया ज्ञानोदय, रावत पब्लिककेन्स, पृ. संख्या. 34।
4. वर्मा, रूपरेखा,(2006),वीमेंस फेसेस मीडिया इमेजेस : कोलकाता, पृ. संख्या. 10।
5. अहूजा, राम,(2004),महिलाओं के खिलाफ हिंसा, पापुलर पब्लिककेंस,नई दिल्ली, पृ0 संख्या. 45।
6. नकवी, हेना,(2017),व्यवहार परिवर्तन संचार और पत्रकारिता, सूचना विभाग : सी.जी.ओ कॉम्पलेक्स, लोदी रोड़, नई दिल्ली,पृ0 संख्या.03।
7. धंडिया,(2008),जेंडर इक्वीलटी प्रोगामिंग, डेनमार्क, मिनीस्टी ऑफ फोरिजीन अफेयर,पृ0 संख्या. 100।